

राजभाषा हिंदी का विकास और यथास्थिति

उर्मिला डिसूज़ा

मौसम विज्ञानी "ए"

जलवायु निगरानी एवं विश्लेषण गट जलवायु अनुसंधान एवं सेवाएं कार्यालय – पुणे

भारत मौसम विज्ञान विभाग INDIAMETEOROLOGICAL DEPARTMENT

प्रस्तावना



- > भाषा, मनुष्य के भावों व विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त साधन है।
- संसार में जितने भी राष्ट्र हैं, प्राय: उनकी राजभाषा वही है जो वहां की संपर्क भाषा है।
- भारत विविधताओं से भरा देश है जहां अनेकता में एकता झलकती है , इसिलिए कहा जाता है कि यहाँ ढाई कोस में बोली बदलती है ।
- आजादी के बाद सभी भारतीय भाषाओं में जो भाषा मनोरंजन, साहित्यिक एवं संपर्क भाषा के रुप में उभरी है वह हिंदी ही है।





प्रस्तावना

आज हिन्दी को जिस रूप में हम देखते हैं उसकी बाहरी आकृति भले ही कुछ शताब्दियों पुरानी हो, किन्तु उसकी जड़ें संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश रूपी



वैज्ञानिक आधार पर विश्व स्तर पर किए गए भाषा-परिवारों के वर्गीकरण के अनुसार हिन्दी को भारतीय आर्य भाषा परिवार से उत्पन्न माना जाता है। अत: हिन्दी आनुवंशिक रूप से आर्य भाषा-संस्कृत से संबद्ध है।



भारतीय भाषाओं के इतिहास का पुनर्लेखन करते हुए भाषा वैज्ञानिक डॉ. जॉन बीम्स ने भारतीय आर्य परिवार की भाषाओं को समाहित करते हुए लिखा है कि

"हिन्दी राष्ट्र के अंतरंग की भाषा है। हिन्दी संस्कृत की वैध उत्तराधिकारी है और आधुनिक भारतीय भाषा व्यवस्था में उसका वही स्थान है जो प्राचीन काल में संस्कृत का था"।





हिन्दी भाषा के विकास की प्रक्रिया आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास के साथ ही प्रारंभ होती है। खड़ी बोली के रूप में पहचानी जाने वाली हिन्दी भाषा का वास्तविक विकास इन चार चरणों में हुआ माना जा सकता है:

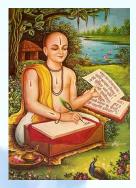
- आदिकाल (मुगलकाल से पूर्व का हिंदू शासन काल)
- मध्य काल (मुगल शासन काल)
- आधुनिक काल (ब्रिटिश शासन काल)
- वर्तमान काल





आदिकाल

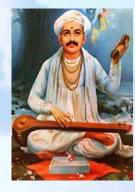
भाषा के विकास-क्रम में अपभ्रंश से हिन्दी की ओर आते हुए भारत के अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग भाषा-शैलियां जन्मीं। हिन्दी इनमें से सबसे अधिक विकसित थी, अतः उसको भाषा की मान्यता मिली। अन्य भाषा शैलियां बोलियां कहलाईं।



तुलसीदास रचित रामचरित मानस अवधी में



सूरदास की रचनाएं बुज भाषा में



कवि विद्यापति की रचनाएं मैथिली में



मीराबाई ने राजस्थानी भाषा को अपनाया



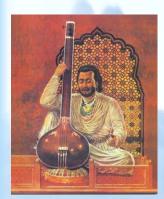


मध्य काल



अकबर के नवरत

अकबर के नवरत्नों में तानसेन तथा बीरबल का हिंदी भाषा के विकास में काफी योगदान रहा



तानसेन

संगीत सम्राट तानसेन की नगरी ग्वालियर के लिए कहावत प्रसिद्ध है कि यहाँ बच्चे रोते हैं, तो सुर में और पत्थर लुढ़कते हैं तो ताल में।



बीरबल

हास्य-परिहास में इनके अकबर के संग काल्पनिक किस्से आज भी कहे जाते हैं। बीरबल एक कवि भी थे। ब्रह्म के नाम उन्होंने एक कवि के रूप में कविताएँ लिखी हैं जो भरतपुर संग्रहालय राजस्थान में सुरक्षित हैं।





आधुनिक काल

राजनीतिशास्त्र के कई विद्वानों का मत है कि जब कोई देश किसी दूसरे देश को पराजित कर अपना गुलाम बना लेता है, तो वह पराजित देश की सभ्यता, संस्कृति, भाषा आदि को नष्ट करने का भरसक प्रयास करता



जो सब से ज्यादा बोली जाती है हम सब को एक बनाती है वो है हिंदी भाषा हम सब का अरमान भारत की शान

पराधीन देश पर आक्रांताओं द्वारा अपनी भाषा को राजकाज की भाषा के रुप में जबरदस्ती थोपा जाता है ताकि पराधीन देश की आने वाली पीढ़ी यह भूल जाए कि वे कौन थूरे, उनकी संस्कृति एवं राजभाषा क्या थी। आजादी से पूर्व खड़ी बोली हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही सामान्य बोलचाल की एकमात्र ऐसी भाषा थी जो किसी न किसी रूप में देश के ज्यादातर भागों में समझी और बोली जाती भी।

15-6€

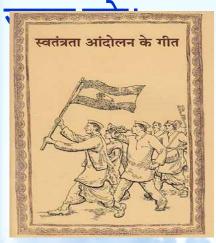




आधुनिक काल

अंग्रेजी शासन को जड़ों से उखाड़ने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि क्रांतिकारियों के बीच में कोई एक भाषा हो जिसमें वह अपनी बात एक दूसरे को

इस अभियान में गांधी जी की भूमिका अहम रही और उन्हें जेल की सज़ा हो जाने पर मदन मोहन मालवीय ने यह कार्यभार सम्भाला।





इसका परिणाम यह रहिन्दी अहित्य अनेवन में हिंदी साहित्य सम्मेलन और दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार सभा जैसी हिन्दी सेवा संस्थाओं का

अतः एक राष्ट्र एक भाषा की भावना यहां जागृत हो उठी और हिन्दी सबसे आगे निकलकर राष्ट्र भाषा, संपर्क भाषा और मानक भाषा बनती चली गई। उत्त मौसम

इनके माध्यम से हजारों अहिंदी भाषी भारतीयों ने स्वैछिक तौर पर हिन्दी को सीखना और अपनाना शुरू किया।

गुडू भारत मौसम विज्ञान विभाग INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT



आधुनिक काल



स्वाधीनता संग्राम के वक्त राष्ट्रीय नेताओं ने स्वदेशीपन या राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का प्रयत्न किया।

देशवासियों के बीच एकता का संचार करने वाली भाषा के रुप में हिन्दी उभर कर सामने आई।







वर्तमान काल



1947 से लेकर अब तक का समय हिन्दी का वर्तमान काल कहलाता है। देश के आज़ाद होने पर हमें भौगोलिक स्वतंत्रता के साथ साथ भाषागत स्वतंत्रता भी प्राप्त हुई।



इस काल में हिन्दी का आधुनिकीकरण और मानकीकरण हुआ।



हिन्दी की इसी विशेषता को ध्यान में रखकर भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को मुंशी अय्यंगर फार्मूले के आधार पर हिन्दी को भारत-संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, तब से प्रत्येक वर्ष 14 सिंतबर को केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में इसे राजभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है।



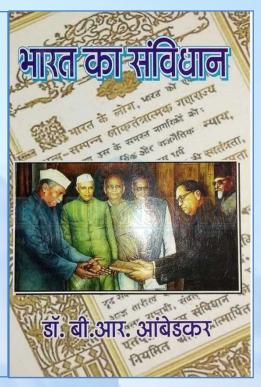




वर्तमान काल

संविधान के अनुच्छेद 343 में यह विशेष रुप से उल्लेख किया गया कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है और जिसकी लिपि देवनागरी होगी।

आखिर वह दिन भी आया जब 26 जनवरी, 1950 को गणतांत्रिक भारत का संविधान लागू हो गया, संविधान के लागू होने के साथ ही सरकारी कामकाज को हिन्दी में पूरा करना अपेक्षित हो गया।





यथास्थिति



अभी विश्व के करीब 130 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है और पूरी दुनिया में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं। चीनी भाषा के बाद यह दूसरी भाषा है जो इतनी बड़ी संख्या में बोली जाती है। आज हिंदी भाषा ने विश्व में अपना स्थान बना लिया है।

विश्व के सौ से भी ज़्यादा विश्वविद्यालयों में हिंदी पढाई जाती है।

आज दुनिया में करोड़ों लोग हिंदी भाषा बोल लेते हैं और कई विदेशी लोग हिंदी लिखने में भी रुचि दिखाने लगे हैं।

चीनी भाषा के बाद हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो इतनी बडी संख्या में बोली जाती है।

आज विश्व के लगभग सभी देशों में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस भी मनाया जाता है, जो इस बात का प्रमाण है कि हिंदी भाषा का व्यापक रूप से प्रचार एवं प्रसार हो रहा है।



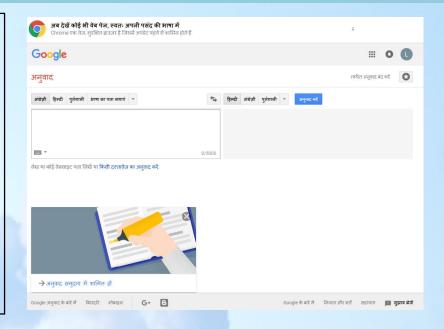




यथास्थिति

लेकिन भारत में आज आज़ादी के 70 वर्ष बीत जाने के बाद भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग मूल रूप से अंग्रेजी के अनुवाद के लिए किया जाता है।

अनुवाद के लिए अधिकतर गूगल ट्रांसलेटर का इस्तेमाल किया जाता है।







लेकिन तात्पर्य यह था कि हिंदी में काम कीजिए, आसान है।

इसलिए भाषा को सीखना ज़रूरी है, तब ट्रांसलेटरों का भी उपायोग उचित ढंग से हो सकता है।





यथास्थिति

अंग्रेजी हमादी मजषूदी हिंदी हमादा स्वाभिमान

क्याभिमानी खने

सच्चाई यह है कि आज भी सरकारी कार्यालयों में अधिकांश कामकाज अंग्रेजी में होता है और अंग्रेजी का हिन्दी अनुवाद कर आंकड़ों को पूरा करने की कार्रवाई कर ली जाती है। सैद्धांतिक रूप में हिन्दी भले ही राजभाषा स्वीकृत हो गई, किन्तु व्यावहारिक रूप में पूरी तरह से कार्यान्वयन हेतु विभिन्न कदम उठाए जाने चाहिए।



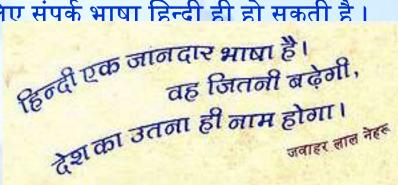






इसके साथ ही हम सभी लोगों के कार्यालयों में हिंदी के निरंतर प्रयोग से वह अंग्रेजी भाषा का स्थान ले लेगी एवं सचमुच में राजभाषा हो जाएगी।

भविष्य में निर्विविद रूप से कहा जा सकता है कि बहुभाषी समाज में अपने विचारों के आदान-प्रदान के लिए संपर्क भाषा हिन्दी ही हो सकती है।



यह स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा समस्त देश-विदेशवासियों को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा है।









धन्यवाद



